'kks/k&izk : i

"नागपुरी के प्रमुख खण्डकाव्य : एक काव्य शास्त्रीय अध्ययन"

ih,p- Mh- gsrq izLrkfor 'kks/k izk:i

नागपुरी भाषा विभाग राँची विश्वविद्यालय, राँची
संकाय– जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
वर्ष–2023

'kks/k funs'kd

¼izks-½ Mk- f=os.kh ukFk lkgw
कुलपति
झारखण्ड राज्य खुला विश्वविद्यालय,
राँची, झारखण्ड।

'kks/kdrk

iadt dqekj
एम. ए. नागपुरी
यू. जी. सी नेट/ एन. एफ. ओ. बी. सी.
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

'kk/k&i.k : i

"नागपुरी के प्रमुख खण्डकाव्य : एक काव्य शास्त्रीय अध्ययन"

प्रस्तावना

नागपुरी भाषा का उदय कब हुआ इसका कोई लिखित प्रमाण नहीं है, लेकिन फिर भी नागपुरी भाषा के विद्वानों का अनुमान है कि नागपुरी भाषा का उदय पांचवी से छठी शताब्दी के आसपास हुआ होगा, जिस प्रकार अन्य देशी भाषाओं का जन्म हुआ होगा।

नागपुरी भाषा को झारखंड के प्राचीन भाषाओं में से एक माना जाता है, नागपुरी भाषा आर्य भाषा परिवार का सदस्य है। नागपुरी भाषा की अपनी एक विशिष्ट एवं गौरवपूर्ण इतिहास रही है। नागवंशी राज काल में यह भाषा राजभाषा के रूप में सुशोभित रही है, वर्तमान में नागपुरी इस पठारी क्षेत्र की मातृभाषा एवं संपर्क भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है।

नागपुरी भाषा का झारखंड में वही महत्व है जो महत्व भारतवर्ष में हिंदी भाषा का है नागपुरी भाषा झारखंड और झारखंड के निकटवर्ती राज्यों के साथ-साथ असम, अंडमान निकोबार जैसे राज्यों के एक बड़े भूभाग की संपर्क भाषा है। डॉ. ग्रियर्सन ने नागपुरी को भोजपुरी की एक विभाषा के रूप में परिगणित किया था, फलत: नागपुरी तथा नागपुरी साहित्य की ओर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट नहीं हो सका इस संबंध में जो छिट पुट कार्य हुए थे उनमें डॉ.ग्रियर्सन की मान्यता को ही दोहराने की चेष्टा की गई थी परंतु अब यह प्रमाणित हो चुका है, कि नागपुरी, मगही, भोजपुरी तथा मैथिली के समान ही एक स्वतंत्र भाषा है। झारखंड के विभिन्न विश्वविद्यालयों में क्षेत्रीय भाषा नागपुरी का भी अध्ययन अध्यापन का कार्य चार दशक पूर्व से ही आरंभ था, इसके बावजूद अब भी नागपुरी साहित्य का कोई क्रमिक विवरण नहीं मिल पाता है।

नागपुरी साहित्य के दो भेद हैं लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य। नागपुरी का पहला शिष्ट रचना 1626 ई. में नागवंश का 50 वाँ राजा रघुनाथ नृपति का है शिष्ट साहित्य का धीरे-धीरे विकास हुआ और अभी नागपुरी साहित्य फल फूल रहा है।

नागपुरी में शिष्ट साहित्य के तीन भेद हैं – गद्य, पद्य एवं चम्पू। गद्य विधा के अंतर्गत कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, संस्मरण, व्यंग्य, आत्मकथा, पत्र वगैरह लिखे जाते हैं। पद्य के अंतर्गत कविता, काव्य, गीत, भजन आदि लिखे जाते हैं। गद्य तथा पद्य मिश्रित काव्य को

"चंपू" कहते हैं। नागपुरी में स्वरूप विधान के आधार पर काव्य के दो भेद है। दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य।

दृश्य काव्य का आनंद मुख्यतः अभिनय देखकर उठाया जाता है। परंतु श्रव्य काव्य आनंद सुनकर या पढ़कर उठाया जाता है। श्रव्य काव्य के दो मुख्य भेद हैं प्रबंध काव्य और मुक्तक।

प्रबंध काव्य वह काव्य है जिसमें कोई कथा सूत्र वर्तमान हो। प्रबंध काव्य के दो भेद होते हैं महाकाव्य और खंडकाव्य।

महाकाव्य की कथावस्तु विस्तृत होती है और उसमें जीवन का व्यापक चित्रण होता है। जैसे- रामायनी सीतायन, रामायण,महाभारत आदि।

खंडकाव्य में जीवनी कि किसी एक अंग का चित्रण होता है। अथवा पात्र जीवन का कोई विशिष्ट क्षण कवि को काव्य रचना की ओर प्रेरित करता है। तब कवि खण्डकाव्य में ही अपनी अनुभूति को साकार देखता है।

प्रबंध काव्य का ही एक भेद खण्डकाव्य होने से प्रबंध काव्य का कुछ गुण इसमें होना स्वभाविक है, जिस प्रकार महाकाव्य में व्यक्ति के समग्र जीवन का अभिव्यक्ति होती है, खंडकाव्य में जीवन के किसी एक ही अंग, रूप या पक्ष का चित्रण होता है फिर भी वह अपने आप में पूर्ण होता है। इसमें कथा का क्षेत्र सीमित होते हुए भी एक तारतम्य रहता है।

अतः नागपुरी भाषा साहित्य के विकास में खण्डकाव्य का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस बात को झूठलाया भी नहीं जा सकता, नागपुरी में गद्य साहित्य की अपेक्षा पद्य साहित्य अधिक समृद्ध है, और पद्य साहित्य का एक अभिन्न अंग खण्डकाव्य भी है। तथा नागपुरी में खंड काव्य की रचना कम देखने को मिलती है,साथ ही इस विषय पर काम भी बहुत कम हुआ है इसलिए खंडकाव्य के लिए शोध आवश्यक प्रतीत हुआ।

शोध की परिकल्पना

वर्तमान समय में नागपुरी भाषा साहित्य को लेकर बहुत से शोध कार्य किए जा चुके हैं, एवं विभिन्न शोधार्थियों के द्वारा शोध कार्य अभी भी किये जा रहे हैं। विशेष कर व्यक्तित्व एवं कृतित्व के क्षेत्र में बहुत सारे शोधार्थियों के द्वारा शोध कार्य किये जा चुके हैं एवं किये भी जा रहे हैं, फलस्वरूप इस विषय को छोड़कर शोधकर्ता को अन्य विषय पर रुचि थी तो शोधकर्ता ने अपने मन की बात शोध निर्देश के समक्ष रखी जिन्होंने शोधकर्ता का मार्गदर्शन किया तथा बहुत सारे शोध विषयों की जानकारी भी दी जिस पर नागपुरी भाषा साहित्य में अभी तक शोध नहीं हुआ था। इन शोध विषयों में से नागपुरी के खंडकाव्य पर शोधकर्ता का ध्यान आकृष्ट हुआ साथ ही इसके बारे में शोधकर्ता पूर्व के पाठ्यक्रम में पढ़ चुका था तत्पश्चात शोधकर्ता ने इस विषय पर ही शोध करने का सोचा ताकि नागपुरी भाषा साहित्य में अभिरुचि के साथ-साथ भाषा ज्ञान की क्षमता एवं योग्यता का विकास किया जा सके।

शोध विषय की प्रेरणा

झारखंड राज्य का दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल शोधकर्ता का जन्म भूमि एवं कर्मभूमि है,साथ ही शोधकर्ता का पठन-पाठन रहन-सहन इत्यादि दक्षिणी छोटा नागपुर के ग्रामीण क्षेत्र में हुआ। जिस कारण शोधकर्ता का संपूर्ण जीवन ग्रामीण स्थिति एवं परिस्थिति से जुड़ा रहा । शोधकर्ता का मातृभाषा नागपुरी है, और इसी भाषा में शोधकर्ता ने अपनी स्नातकोत्तर की पढ़ाई संपन्न की है इस दौरान शोधकर्ता का नागपुरी से संबंधित महाकाव्य खंडकाव्य इत्यादि को नजदीक से सीखने एवं जानने का शुअवसर प्राप्त हुआ स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के काल अवधि के दौरान शोधकर्ता को ऐसा प्रतीत हुआ कि अपने मातृभाषा नागपुरी में अपना कुछ योगदान दे सके।

खंडकाव्य नागपुरी भाषा का एक महत्वपूर्ण अंग है झारखंड के लोगों का नागपुरी खंडकाव्य में श्रद्धा प्रेम अटूट विश्वास एवं लगाव के कारण ही यह पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ती चली आ रही है, और शोधकर्ता इससे इतना प्रभावित हुआ कि उसने इस विषय पर अपने शोध निर्देशक से विस्तृत रूप में चर्चा किया तत्पश्चात शोध निदेशक ने "नागपुरी के प्रमुख खंडकाव्य: एक शास्त्रीय अध्ययन" विषय पर शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया जिससे शोधकर्ता के मन में नया उत्साह एवं ऊर्जा का संचार हुआ इस शोध कार्य के विषय में डॉ.

उमेश नंद तिवारी, डॉ. सविता केसरी, प्रो. वीरेंद्र कुमार महतो, डॉ. अमित कुमार, नमिता पूनम एवं जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के अन्य प्राध्यापकों ने प्रेरित किया। शोधकर्ता अपने शोध कार्य से नागपुरी के खंडकाव्य को समेटने का प्रयास करेगें जिससे आने वाली पीढ़ी को इस शोध कार्य के द्वारा नागपुरी के खंडकाव्य संबंधित जानकारियाँ प्राप्त हो सकेगा।

शोध का औचित्य

किसी भी शोध का महत्व तब तक नहीं होता जब तक की उसकी उपयोगिता समाज, प्रदेश एवं देश के लिए ना हो।

शोध का उद्देश्य

किसी शोध कार्य को प्रारंभ करने के पूर्व शोध से संबंधित उद्देश्य निर्धारित की जाती है। इस शोध प्रबंध का निम्नांकित उद्देश्य है।

• नागपुरी साहित्य का गहन अध्ययन करना।

• नागपुरी साहित्य का महत्व एवं उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि करना साथ ही इनके संकलन, संचयन एवं मूल्यांकन की दिशाएं प्रशस्त करना।

• इस भाषा साहित्य में नागपुरी खंडकाव्य के माध्यम से झारखण्डी सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाश डालना।

• नागपुरी भाषा साहित्य को सुदृढ़ करना।

• झारखण्ड के सामाजिक- सांस्कृतिक विकास में योगदान देना।

शोध का महत्व

"नागपुरी के प्रमुख खण्डकाव्य: एक काव्य "शास्त्रीय अध्ययन" शोध से समाज में निम्नलिखित प्रभाव पड़ेगा :-

• इस शोध प्रबंध के प्रकाशन में आने से समस्त नागपुरी भाषा भाषियों एवं नागपुरी खण्डकाव्य के प्रति जागृति की लहर आएगी।

• इससे समकालीन नागपुरी भाषा भाषियों को साहित्य समीक्षा पर शोध के लिए आदर्श साबित होगा।

• निज भाषा प्रेम एवं संस्कृति के प्रति लोगों का रुझान बढ़ेगा एवं एक नई जागृति उत्पन्न होगी।

• अन्य झारखण्डी भाषाओं में शोध हेतु प्रेरणादायक साबित होगा।

• साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र के लिए लाभकारी होगा।

इस शोध कार्य के प्रति भावी पीढ़ी का मनोबल बढ़ेगा।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध प्रारूप के अध्ययन हेतु निम्नलिखित शोध विधियों का अनुसरण किया जाएगा। :-

• शोध विषय से संबंधित सामग्रियों को इकट्ठा करने के लिए अवलोकन विधि का प्रयोग किया जाएगा।

• शोध विषय से संबंधित विद्वानों का साक्षात्कार लिया जाएगा।

• शोध विषय का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाएगा।

• विद्वानों से शोध विषय से संबंधित प्रश्न पूछ कर समस्या का समाधान किया जाएगा।

• अंततः शोध विषय का मूल्यांकन किया जाएगा।

सामग्री संकलन के लिए उपयोग में आने वाले विभिन्न उपकरण :-

• दूरस्थ लोगों से पत्राचार

• कैमरा, कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल

• सूचनादाता

• टंकन मशीन, रेडियो समाचार पत्र

• पत्र पत्रिकाओं की सूची

• टेप रिकॉर्डर

• पेन ड्राईव, इंटरनेट का प्रयोग आदि

पीएच० डी० शोध प्रारूप की रूपरेखा :-

शोध विषय :- "नागपुरी के प्रमुख खण्डकाव्य : एक काव्य शास्त्रीय अध्ययन" :-

विषय सूची

- प्रस्तावना
- शोध की परिकल्पना
- शोध विषय की प्रेरणा
- शोध का औचित्य
- शोध का उद्देश्य
- शोध का महत्व
- शोध प्रविधि

प्रथम अध्याय :-खण्डकाव्य की भूमिका

(क) अर्थ

(ख) परिभाषा

(ग) लक्षण

(घ) स्वरूप

(ड़) विशेषता

द्वितीय अध्याय :- नागपुरी के प्रमुख खण्ड काव्यकारों का परिचय

(क) जयगोविंद मिश्र

(ख) गौरी नंदन शर्मा

(ग) शारदा प्रसाद शर्मा

(घ) बलदेव साहू

(ड़) दृगपाल राम देवघरिया

(च) साहनी उपेंद्र पाल नहन

(छ) चुनी राम दुबे (कंचन)

(ज) धनेंद्र प्रवाही

(झ) कृष्ण कलाधर

तृतीय अध्याय :- नागपुरी के प्रमुख खण्ड काव्यो का परिचय

(क) लंका कांड

(ख) वीर राघव चरित

(ग) विप्लवी महान

(घ) भगवान एक पूरब के

(ड़) लव कुश चरित

(च) मधु कलश (नल दमयंती)

(छ) मेवाड़ केशरी

(ज) लोर

(झ) ईसु चरित

चतुर्थ अध्याय :-नागपुरी के अनुवादित खण्ड काव्यों का परिचय

(क) साम पेयारी

पंचम अध्याय :- नागपुरी के खण्ड काव्यों का भाव पक्ष

(क) भाव पक्ष का परिचय

(ख) खण्डकाव्य में भाव पक्ष

(ग) खण्डकाव्य में रस

षष्ठम् अध्याय :-नागपुरी के खण्ड काव्यों का कला पक्ष

(क) भाषा

(ख) अलंकार

(ग) छंद

(घ) प्रतीक

(ङ़) चित्र विधान

(च) बिंब विधान

(छ) शब्द शक्ति

(ज) गुण

(झ) दोष

उपसंहार

नोट :- प्रस्तावित शोध प्रारूप की रूपरेखा में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सकता है।

परिशिष्ट :-

- आधार ग्रंथों की सूची
- संदर्भ ग्रंथों की सूची
- पत्र पत्रिकाओं की सूची
- समाचार पत्रों की सूची
- साक्षात्कार की सूची
- चित्रावली

संदर्भ ग्रंथों की सूची :-

1. डॉ. राम प्रसाद - स्वातंत्र्योत्तर नागपुरी साहित्य एक शास्त्रीय अध्ययन, झारखंड झरोखा,राँची द्वितीय संस्करण 2014

2. शारदा प्रसाद शर्मा 'रश्मि' - विप्लवी महान - मुद्रक जी. ई. एल. चर्च प्रेस, राँची, अगस्त 1977 ई.

3. शारदा प्रसाद शर्मा 'रश्मि' - भगवान एक पूरब के - मुद्रक जी. ई. एल. चर्च प्रेस, राँची मार्च 1980 ई.

4. सहनी उपेंद्रपाल 'नहन' - मेवाड़ केसरी - साहित्य आश्रम, गुमला 1986 ई.

5. डॉ. बी. पी. केशरी - कवि रत्न शारदा प्रसाद शर्मा, एक अंतरंग आकलन, राँची 1994 ई.

6. कविवर द्दगपाल राम देवघरिया कृत - मधु-कलश(नल-दमयंती), अर्थकार बड़ाईक ईश्वरी प्रसाद सिंह, संपादक उपेंद्र पाल 'नहन', प्रकाशक साहित्य आश्रम, गुमला 1986 ई.

7. शकुंतला मिश्र एवं डॉ. उमेश नंद तिवारी-नागपुरी (सदानी) व्याकरण झारखण्ड झरोखा, राँची संस्करण 2018

8. बलदेव प्रसाद साहू, - लव-कुश-चरित्र - कमल प्रकाशन, राँची 1971 ई.

9. पौराणिक गौरीनंदन शर्मा - वीर राघव चरित(प्रथम तरंग), राँची, 1972 ई.

10. संपादक डॉ. बी.पी. केसरी , प्रफुल्ल कुमार राय और प्रमोद कुमार,- नागपुरी काव्य-कुंज राँची 1986 ई.

11. डाँ. राजकिशोर सिंह, डॉ. दुर्गा शंकर मिश्र भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र, प्रकाशन केंद्र रेलवे क्रॉसिंग, सीतापुर रोड, लखनऊ, ई. अलिखित

12. डॉ. त्रिवेणी नाथ साहू - नागपुरी काव्य में प्रकृति चित्रण, अ. शो. प्र. राँची,1995 ई.

13. कुमारी मीना गौंझू - नागपुरी काव्य में झारखंडी जीवन का चित्रण, लघु शोध प्रबंध राँची, 1992 ई.

14. बिनेश्वर साहू - उपेंद्र पाल सिंह 'नहन' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, ल. शो. प्र., 1992 ई.

15. डॉ. भुवनेश्वर अनुज नागपुरी - लोक साहित्य। - झारखण्ड झरोखा, राँची - तृतीय संस्करण 2013

16. कृष्ण कलाधर - ईसु चरित - नागपुरी संस्थान पिठोरिया राँची - प्रथम संस्करण 2017

पत्र-पत्रिकाओं की सूची :-

1. आदिवासी (साप्ताहिक), राँची
2. नागपुरी (मासिक), राँची
3. कोयनार (वार्षिक), रातू राँची
4. आदिवासी सकम (सप्ताहिक), जमशेदपुर
5. अम्बुआ झारखण्ड (साप्ताहिक), राँची
6. झारखण्ड समाचार (साप्ताहिक), राँची
7. जय झारखंड (त्रैमासिक), डाल्टेनगंज
8. शंखनाद (त्रैमासिक), सिमडेगा

समाचार पत्रों की सूची :-

1. प्रभात खबर - कोकर, राँची
2. हिंदुस्तान - कोकर, राँची
3. दैनिक जागरण - कोकर राँची
4. दैनिक भास्कर - रातू रोड, राँची
5. राँची एक्सप्रेस - अपर बाजार राँची

शोध निर्देशक	शोधकर्ता
(प्रो.) डॉ. त्रिवेणी नाथ साहू	पंकज कुमार
कुलपति	एम. ए. नागपुरी
झारखण्ड राज्य खुला विश्वविद्यालय,	यू.जी.सी. नेट /एन. एफ. ओ. बी. सी.
राँची, झारखण्ड	जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची